ISSN 0973-8541, HUMANITIES AND DEVELOPMENT, VOL.18, NO.2, JULY-DEC,2023 /28

पंडित जवाहरलाल नेहरू की विदेश नीति (भारत–अमेरिका) सम्बन्ध वर्तमान परिप्रेक्ष्य

शोध छात्र प्रमोद कुमार राजनीति विज्ञान
शोध निर्देशक–डॉ0 प्रमोद सिंह एसोसिएट प्रोफेसर राजनीति विज्ञान विभाग
टी0 एन0 पी0 जी0 कॉलेज टाण्डा, अम्बेडकर नगर
https://doi.org/10.61410/had.v18i2.139

सारांश :– द्वितीय विश्व युद्ध के बाद अमेरिका और रूस का महा शक्तियों के रूप में उदय हुआ ये ऐसे राष्ट्र थे जो सिर्फ बड़ी शक्तियां नहीं थे बल्कि इनके सैनिक बल, आर्थिक क्षमता, तकनीकी संभावनाओं आदि की कोई तुलना और किसी बड़ी शक्ति के साथ नहीं की जा सकती यह महा शक्तियां जिनके अपने राष्ट्रहित विश्वव्यापी थे और अपनी रक्षा तथा संवर्धन के लिए विश्व परिप्रेक्ष्य में अपनी नीति निर्धारण का संचालन करती थी।

मुख्य शब्दः– राष्ट्रहित, साम्राज्यवादी, पार्थक्यवादी, स्वशासन।

प्रस्तावना :– स्वतंत्रता प्राप्ति के पूर्व भारत और संयुक्त राज्य अमेरिका में कोई विशेष संपर्क ना था इसके कई कारण थे। प्रथम भारत और संयुक्त राज्य अमेरिका एक दूसरे से बहुत दूरी पर स्थित थे। दूसरा अंग्रेजी सरकार जानबूझकर ऐसी नीति का अवलंबन करती थी ताकि भारतीय किसी दूसरे देश के संपर्क में ना आए। तीसरा द्वितीय विश्व युद्ध के पूर्व तक संयुक्त राज्य अमेरिका भी विश्व राजनीति में पार्थक्यवादी नीति (Policy Isolation) का आलंबन करता रहा चीन और जापान को छोड़कर एशिया के मामले में उसने कभी विशेष रूचि लेने की प्रवत्ति का प्रदर्शन नहीं किया। सांस्कृतिक स्तर पर दोनों देशों का संपर्क नाम मात्र का था स्वतंत्रता से पहले कुछ अमेरिकी लेखक और पत्रकार भारत की यात्रा की थी, लेकिन भारतीय जीवन की गंदगी का निरीक्षण करना ही उन्होंने अपना मुख्य ध्येय माना था। मिस मेयो द्वारा ''मदर इंडिया'' की पुस्तक की रचना इसी उद्देश्य से की थी बहुत कम संख्या में अमेरिकी यात्री भारत आते थे क्योंकि एक तो भारत की गरीबी, अशिक्षा, अंधविश्वास आदि को लेकर विचित्र कहानियां अमेरिका में प्रचलित थी।

इन सारी बाधाओं के बावजूद प्रथम विश्व युद्ध के उपरांत भारत और संयुक्त राज्य अमेरिका के मध्य धीरे–धीरे संपर्क बढ़ने लगा भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन के नेता अमेरिका को स्वतंत्र और प्रजातंत्र का देश मानते थे और उनका मानना था कि भारतीय स्वाधीनता की लड़ाई में उन्हें अमेरिका की सहानुभूति अवश्य प्राप्त होगी प्रथम विश्व युद्ध के समय भारतीय नेताओं ने राष्ट्रपति वुडरो विल्सन के आत्मनिर्णय के सिद्धांत का स्वागत किया सन् 1919 में दिल्ली कांग्रेस अधिवेशन के अध्यक्ष मदन मोहन मालवीय ने विल्सन को पृथ्वी पर न्याय कायम करने के लिए ईश्वर का दूत कहा उन्होंने विल्सन के 14 सूत्रों को बड़े उत्साह से स्वागत किया। इस प्रकार भारतीयों ने राष्ट्रपति विल्सन से बड़ी बड़ी उम्मीदें की और यहां विश्वास किया। कि पेरिस के शांत सम्मेलन में उनकी मदद से भारत को स्वशासन का अधिकार प्राप्त होगा पर इस सम्बन्ध में भारतीयों को बड़ी निराशा हुई जब विल्सन ने उनके प्रति किसी तरह की कोई रूचि नहीं ली। इसी समय अक्टूबर 1917 में अमेरिका में निवास करने वाले भारतीयों ने एक इंडियन होम रूल लीग की स्थापना कर ली थी प्रथम विश्व युद्ध के बाद जब वुडरो विल्सन ने स्वशासन के सिद्धांत को लागू नहीं किया तब उन्होंने राष्ट्र संघ और वर्षाय संघ के विरुद्ध एक आंदोलन शुरू कर दिया तब अमेरिकी लोगों से इस संगठन ने आग्रह किया कि वह तब तक शांति समझौते को मानने के लिए तैयार नहीं है जब तक भारत के साथ न्याय नहीं होगा।

भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस ने अमेरिका सीनेट के समक्ष पेश करने के लिए एक ज्ञापन पत्र तैयार किया जिसको सीनेटर मिलोन ने सीनेट की बैदेशिक सम्बन्ध विशेष समिति के समक्ष पेश भी किया लेकिन भारतीय दृष्टिकोण से इन प्रयासों का कोई नतीजा नहीं निकला अमेरिका सरकार से कोई सहानुभूति प्राप्त नहीं हुई। 1927 में भारतीयों ने इंडिया लीग नामक दूसरी संस्था संयुक्त राज्य अमेरिका में स्थापित किया इस संस्था में इंडिया टुडे नामक एक मासिक पत्र का प्रकाशन भी शुरू किया इसी तरह की एक दूसरी संस्था भारतीय स्वाधीनता की राष्ट्रीय समिति 1943 में वाशिंगटन में स्थापित की गई व्यास आफ इंडिया के नाम से इसका भी एक पत्र निकला। इन दोनों संस्थाओं का उद्देश्य भारतीय परिस्थिति से अमेरिकी लोकमत को अवगत कराना था 1927 में सी 0एफ0 एंड्रयूज तथा श्रीमती सरोजिनी नायडू ने भारतीय समस्या के प्रति अमेरिकी सहानुभूति प्राप्त करने के उद्देश्य से संयुक्त राज्य अमेरिका का दौरा किया यह यात्रा काफी लाभदायक रही भारत के लिए मामले में अमेरिकी लोगों की रुचि बड़ी।[3] 1927 के पद दलित राष्ट्र ब्रुसेल्स सम्मेलन में लैटिन अमेरिका में संयुक्त राज्य अमेरिका की साम्राज्यवादी नीति से पंडित जवाहरलाल नेहरू को परिचित कराया।[4] ब्रुसेल्स सम्मेलन के सम्बन्ध में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस को दिए गए प्रतिवेदन में पंडित नेहरू जी ने लिखा था हम में से बहुतेरे विशेषता एशिया वाले दक्षिण अमेरिका में संयुक्त राज्य अमेरिका के साम्राज्यवादी विस्तार के बारे में कुछ नहीं जानते लेकिन यह एक ऐतिहासिक तथ्य है और अधिक दिनों तक हम उसकी उपेक्षा नहीं कर सकते हैं क्योंकि भविष्य की सबसे महान समस्या अमेरिकी साम्राज्यवादी होने जा रहा है ब्रिटिश साम्राज्य वाद के दिन अब लद चुके हैं। 1927 में संयुक्त राज्य अमेरिका के प्रति जो धारणा पंडित नेहरू जी की बनी उसने निश्चित रूप से स्वतंत्र भारत और उनके सम्बन्धों को प्रभावित किया द्वितीय विश्व युद्ध छेड़ने और पार्ले हर बर घटना के उपरांत संयुक्त राज्य अमेरिका के युद्ध में प्रवेश करने से सरकारी स्तर पर दोनों देशों के बीच सम्बन्ध कायम होना अवश्यंभावी हो गया भारतीय सम्बन्धों में संयुक्त राज्य अमेरिका की एका एक बेहद बढ़ गये।

नेहरू युग भारत और अमेरिका सम्बन्ध 1947 से 1964 ईस्वी

पंडित जवाहरलाल नेहरू के समय भारत और अमेरिका के सम्बन्धों की नीव पड़ी नेहरू का व्यक्तित्व और दर्शन अमेरिका नीति निर्माताओं से काफी दूर रहा अंतराष्ट्रीय समस्याओं पर उनकी समझ वाइट हाउस और पेण्टागन से भिन्न थी अतः ट्रूमैन, आइजनहावर, डलेस, केनेडी और जानसन के लिए वह पेचीदा व्यक्तित्व बने रहे नेहरू जी के बारे में आइजनहावर ने लिखा था कि पंडित नेहरू का व्यक्तित्व दुर्बोध और उपनिवेशवादी है नेहरू को उन्होंने एक बुद्धिजीवी कुलीन आत्मसालंगी के रूप में देखा था भारत और एशिया की उभरती आकांक्षाओं के प्रतीक के रूप में नहीं स्वतंत्र भारत की गुटनिरपेक्ष नीति प्रारंभिक काल में अमेरिकी शासकों के समझ से परे रही तो दूसरी और तीसरी दुनिया में अमेरिका की महत्वाकांक्षी भूमिका भारत के लिए स्वीकार करना कठिन था। 1949 में जब नेहरू जी पहली बार अमेरिका की यात्रा पर गए तो उन्होंने अपने दौरे को 'खोज यात्रा'' का नाम दिया तब उन्होंने आशा की थी भविष्य में अंतर्राष्ट्रीय रंगमंच पर इन दोनों के बीच सहकार संभव होगा शीत युद्ध के आविर्भाव के साथ तत्कालीन विदेश मंत्री डलेस यह बात साफ कर दी जो भी देश अपने को गुटनिरपेक्ष कहता है अमेरिका अपना सत्र मानेगा पंडित नेहरू शांतिप्रिय निशस्त्रीकरण के पक्षधर थे और सैनिक संगठनों के कट्टर विरोधी थे इसके अतिरिक्त रंगभेद, नस्लवाद और उपनिवेशवाद के खिलाफ़ लड़ाई में अफ्रो एशियाई जगत के नेतृत्व के कारण भी भारत अमेरिका वैमनस्य गहरा हुआ, पंडित जवाहरलाल नेहरू जी के लिए युद्ध जनित दबाव के कारण घटिया तानाशाहों का समर्थन कर रहा था। भारत की सबसे बड़ी समस्या आर्थिक विकास की थी उसे बड़े पैमाने पर विदेश पूजी और तकनीकी जरूरतें थी जिस समय आमेरिका खुले हाथो से युद्ध ध्वस्त यूरोप के पुनर्निमाण के लिए मार्शल योजना की प्रस्तावना कर रहा था, उस वक्त दारुण अकाल से जूझते भारत को किसी भी तरह

की राहत पहुंचाने के लिए कोई उत्साह नहीं दिखा रहा था। 1951ई0 में खाद्यान्न ऋण पाने के लिए जब भारतीय राजदूत श्रीमती विजयलक्ष्मी पंडित ने अमेरिका के सामने मांग की तो उन्हें बुरी तरह अपमानित होना पड़ा। तिब्बत के सम्बन्ध में भारत ने चीन से जो संधि की उसे भी अमेरिका ने अनुचित समझा और भारत को साम्यवाद के प्रति समर्पण माना। जब 1955 में सोवियत संघ के नेताओं ने भारत की यात्रा को तब भी अमेरिका समाचार पत्रों ने इस आशय पर विचार व्यक्त किया भारत सच्चे अर्थों में गुटनिरपेक्ष नहीं है।

उसने गुप्त नीति से साम्यवादी गुट में शामिल कर लिया है। अमेरिका के प्रसिद्ध समाचार पत्र न्यूयॉर्क टाइम्स ने 15 दिसम्बर 1955 को संपादकीय लेख में अस्पष्ट रूप से लिखा था, 1961 में गोवा के मामलों में दोनों देशों के मध्य सम्बन्धों में विकृति आयी। भारत सरकार ने अपनी इस क्षेत्र को पुर्तगाल की अधीनता स्वतंत्र कराने के लिए अत्यधिक प्रत्यनशील रहा, भारत के लिए गोवा को पुर्तगाली उपनिवेशवाद से मुक्त कराना उसके एकीकरण और राष्ट्रीय सुरक्षा की दृष्टि से सर्वाधिक महत्वपूर्ण था। भारत इसका समाधान मैत्रीपूर्ण वार्ता के द्वारा ही कराना चाहता था किंतु पुर्तगाल सरकार ने कोई सहयोग नहीं दिया। इसी विषय पर अमेरिका का दृष्टिकोण विचित्र रूप से भारत के विरुद्ध रहा। गोवा का स्वतंत्रता आंदोलन अमेरिका में बड़ी आलोचना का विषय रहा। इसका प्रमुख कारण था कि पुर्तगाल नाटो का सदस्य था। अमेरिका अपने मित्र को नाराज करना नहीं चाहता था और भारत को ही हिंसा और खून खराबा की स्थित उत्पन्न करने के लिए उत्तरदायी ठहराया।

नेहरू युग में कई मसलों पर भारत और अमेरिका में मतभेद के बावजूद कई क्षेत्रों में सहयोग का आधार मौजूद है। नेहरू का मानना था कि दोनों देश लोकतांत्रिक संस्थाओं और लोकतांत्रिक जीवन की प्रहरी के प्रति समान विश्वास था और शांति स्वतंत्रता की रक्षा के लिए दृढ़ संकल्प है ऐसी स्थिति में इन दोनों के बीच मैत्री और पारस्परिक सहयोग होना अत्यंत स्वाभाविक है। नेहरू युग में दोनों के नागरिको का संपर्क सर्वदा बना रहा हजारों की संख्या में भारतीय नागरिक भारत कार्यों के लिए शिक्षण प्रशिक्षण व्यापार और भ्रमण के लिए अमेरिका जाते रहे इसी प्रकार अमेरिका के नागरिक भारत आते रहे। 1956 में स्वेज संकट की समय
अमेरिका द्वारा अपनाई गई नीतियों का भारत ने समर्थन किया।

भारत और अमेरिका का सम्बन्ध (वर्तमान परिप्रेक्ष्य में)

भारत के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने 26 से 30 सितंबर 2014 तक अमेरिका की यात्रा कर 29 से 30 सितम्बर को वाशिंगटन में उनकी राष्ट्रपति बाराक कोबामा से दोबारा लंबी वार्ता हुई। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और राष्ट्रपति बराक ओबामा तो ने पहली शिखर स्तरीय बैठक में भारत अमेरिका द्विपक्षीय व्यापार सम्बन्धों को नई ऊंचाईयों पर ले जाने, आज सैन्य प्रमाण करार को लागू करने और आतंकवाद से लड़ने में सहयोग की प्रतिबद्धता जताई और संयुक्त बयान में भारत अमेरिका विश्व को हथियार मुक्त करेंगे भाविक साझेदारी है और दोनों नेताओं के बीच लंबी वार्ता में आर्थिक सहयोग व्यापार और निवेश सहित कई मुद्दों पर चर्चा हुई।

भारतीय प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने डब्ल्यूटीओ की व्यापार समझौते पर कई बार मुद्दा भी उठाया दोनों नेताओं के बीच डब्ल्यूटीओ पर खुलकर चर्चा की! इस विषय पर सहमति बनी, निम्न बिंदुओं पर दोनों देशों के नेताओं के बीच विशेष सहमति ।

रक्षा सहयोग के फ्रेमवर्क एग्रीमेंट को 10 वर्षो के लिए बढ़ाने पर।
जलवायु परिवर्तन पर दोनों देश चिंतित योग यह दोनों के लिए।
परमाणु नागरिक ऊर्जा सहयोग और परमाणु निशस्त्रीकरण पर ज़ोर दिया।
रणनीतिक और खुफिया साझेदारी को और अधिक मजबूत बनाने पर।
आतंकवाद के खिलाफ़ मिलकर लड़ेंगे विश्व को हथियार मुक्त करेंगे।

जलवायु परिवर्तन के प्रभाव को कम करने के लिए काम करेंगे अमेरिका परमाणु बिजली तकनीकी भारत लाने में मदद करेंगे।

2024 में अमेरिका द्वारा एक विजन स्टेटमेंट 'चले 'साथ साथ' जारी किया इस मिशन स्टेटमेंट में सुरक्षा आतंकवाद जलवायु परिवर्तन आर्थिक विकास निशस्त्रीकरण आदि मुद्दों पर सहयोग की बात की गई दोनों देश देशों के बीच विज्ञान प्रौद्योगिकी जॉब व्यापार पर महत्वपूर्ण समझौते हुए।

निष्कर्ष :– पंडित जवाहरलाल नेहरू के समय भारत और अमेरिका के सम्बन्धों की नीव पड़ी। परंतु भारत और अमेरिका के सम्बन्धों का कोई खास अच्छा नहीं था। 1951 ईस्वी में खाद्यान्न पाने के लिए जब भारतीय राजदूत श्रीमती विजयलक्ष्मी पंडित ने अमेरिका के सामने मांग की तो उनकी तरफ ध्यान नहीं दिया गया और तिब्बत के सम्बन्ध में भारत ने चीन से जो संधि की उसे भी अमेरिका ने अनुचित समझा और भारत को साम्यवाद के प्रति समर्पण माना । जब सोवियत संघ के नेताओं ने भारत की यात्रा की तब भी अमेरिका की समाचार पत्रों ने इससे पर विचार व्यक्त किया भारत सही अर्थों में गुटनिरपेक्ष नहीं है तो हम इस प्रकार कह सकते हैं कि नेहरू युग में शुरुआत में अमेरिका और भारत के सम्बन्ध मधुर नहीं थे। वर्तमान में भारत के प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी ने 26 से 30 सितंबर 2014 तक अमेरिका की यात्रा की सितंबर 2014 को वाशिंगटन में उनकी मुलाकात अमेरिकी राष्ट्रपति बराक ओबामा से हुयी और लंबी वार्ता की। भारतीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी और राष्ट्रपति बराक ओबामा ने पहली सीकर स्तरीय बैठक में भारत और अमेरिका द्विपक्षीय सम्बन्धों को नई ऊंचाइयों पर ले जाने का प्रयास किया। इस प्रकार वर्तमान में कहा जा सकता है कि भारत और अमेरिका के सम्बन्धों में सुधार होता हुआ दिखाई दे रहा है और भारत–अमेरिका हर क्षेत्र में निसंदेह काफी नजदीक आ रही है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1– पंत, पुष्पेश एवं जैन, श्रीपाल अंतरराष्ट्रीय सम्बन्ध (1919 से अध्ययन मेरठ मीनाक्षी)
2– दीक्षित, जे. ए. एन. भारतीय विदेश नीति, नई दिल्ली, प्रभात प्रकाशन, 2006
3– फड़िया. बी. एल. अंतर्राष्ट्रीय राजनीति, साहित्य भवन, आगरा, 1980
4– फड़िया. बी. एल. अंतर्राष्ट्रीय सम्बन्ध, साहित्य भवन, आगरा, 1993
5– नेहरू, जवाहरलालः भारतीय विदेश नीति, नई दिल्ली 1958, पृष्ठ 239
6– मिश्रा, के. पीः भारत की विदेश नीति, नई दिल्ली, 1963
7 वर्मा दीनानाथः अंतरराष्ट्रीय सम्बन्ध, ज्ञानंदा प्रकाशन, पटना, 2004 पृष्ठ. 126
1. B PRASAD, Origins of India Policy, p,.63 वर्मा, दीनानाथ अंतरराष्ट्रीय संबंध ज्ञानदा प्रकाशन घटना 2004 275 से 276
2. D.N. VERMA, India and the league of Nations P. 27 वर्मा , दीनानाथ अंतरराष्ट्रीय संबंध ज्ञानदा प्रकाशन घटना 2004 ,पृष्ठ 275
3. B.PRASHAD THE ORIGINS OF INDIA FOREIGN POLICE P.89
4. जवाहरलाल नेहरू An Autobiography Report on the international congress Against imperialism held at Brussels the Indian National Confess, 1927 pp.63- 64
5. जवाहरलाल नेहरू The India Congress 1927 p.63- 40. वही पृष्ठ
6. विदेश मंत्रालय भारत सरकार 2019 से 2020 बी.एल.फाडिया. साहित्य भवन आगरा, पृष्ठ 379 से 360